# Appendix 21
# Report of Chakmak Review Workshop

### चकमक समीक्षा बैठक -रपट

समीक्षा बैठक में चकमक के पिछले छह अंकों की समीक्षा की गई। चकमक के विविध पक्षों पर बातचीत हुई। इसमें चकमक के दो पक्षों - डिज़ाइन पक्ष तथा विज्ञान की सामग्री - पर यह आम टिप्पणी रही कि वे कमजोर हैं तथा उन पर गंभीर रूप से काम करने की ज़रूरत है। सुझाव कई थे। उनका संक्षिप्त रूप यहाँ प्रस्तुत है -

**कथा साहित्य** - पिछले छह महीने में चकमक में कथा साहित्य (लघुकथाएँ, लोककथाएँ, और चित्रकथाएँ) तथा कविताएँ ही आमतौर पर पेश की जाती रही हैं। समीक्षा बैठक में इन दो विधाओं की सामग्री को सराहा भी गया नही। दूसरी विधाओं जैसे नाटक, यात्रा वृतांत, डायरी, पत्र, धारावाहिक, विज्ञान कथा, हास्य-व्यंग्य, आदि पर चकमक में न के बराबर सामग्री रही है। बच्चों के लिए इन विधाओं पर हिन्दी में बहुत ही कम सामग्री उपलब्ध है। इसलिए इन विधाओं की सामग्री को जुटाने के लिए हमें अलग से प्रयास करने होंगे। इन प्रयासों में लेखन कार्यशालाएँ तथा चुनिंदा व्यक्तियों से चकमक के लिए सतत रूप से लिखने का आग्रह करना आदि शामिल हैं। इससे सामग्री में भाषा-शैली, तथा कथ्य व विषय के स्तर पर निश्चित रूप से विविधता भी आएगी। मसलन कविता के विविध रूपों नज़्म, ग़ज़ल, हाइकू, अतुकांत कविता, नॉनसेंस राइम, दो लाइनी कविताएँ आदि पर तो सामग्री हो ही, विषयों के स्तर पर भी नयापन तथा विविधता सुनिश्चित हो। यही बात अन्य चीज़ों मसलन कहानी के मामले में भी सुनिश्चित होना चाहिए।

-समीक्षा बैठक में यह बात भी उठी कि चकमक में समसामयिक सामग्री का अभाव है। सामग्री तथा कलेवर को देखकर कर पता नहीं चलता कि चकमक का कोई अंक किस साल का है। निश्चित ही चकमक कोई समाचार पत्रिका (न्यूज़ मैग्ज़ीन) नहीं है पर उसे विभिन्न स्तरों पर समसामयिक होना चाहिए। उसमें समय की छाप दिखना चाहिए। यह दो स्तरों पर हो सकता है। एक तो चित्रों के स्तर पर दूसरा सामग्री के विषय के स्तर पर। चित्रों के स्तर पर हमें उन सभी गुंजाइशों को तलाशना होगा जिनके द्वारा प्रस्तृति को दौर से जोड़ा जा सकता है। विशेष रूप से महत्वपूर्ण, पर साथ ही नए विषयों पर आज के विवरणों वाला कथा साहित्य जुटाना इस दृष्टि से सिनेमा, खेल, इंटरव्यू, डायरी, पुस्तक अंश जैसे स्तम्भों में काफी सम्भावनाएँ दिखाई देती हैं।

बच्चों के पन्ने के बारे में भी कई सुझाव आए। बच्चों के पन्नों को अलग करके क्यों देखा जाना चाहिए?, बच्चों की रचनाओं के लिए बच्चों के चित्र ही क्यों उपयोग करना चाहिए?, ऐसे प्रश्नों पर विचार हुआ। ये सुझाव भी आए कि बच्चों की रचनाओं का चुनाव कड़ाई से किया जाना चाहिए, और उन्हें विशेष विषयों (थीम) पर लिखने के लिए प्रोत्साहित किया जाना

चाहिए। किसी ने यह भी कहा कि बच्चों के पन्ने नहीं होना चाहिए। बच्चों के पन्नों का लेआउट-डिज़ाइन कच्चा है। आदि।

**गैरकथा साहित्य**

विज्ञान की सामग्री के विषय में समीक्षा बैठक में कई सुझाव आए। इनमें प्रमुख हैं - इसके लेख सामान्यतया जानकारी आधारित होते हैं जो ज़रूरी है, पर कम से कम एक लेख विश्लेषणात्मक होना चाहिए; लेखों में विषय को उसके विविध पहलुओं के साथ पेश किया जाना चाहिए; खासकर थीम आधारित लेखों में लेखों की भाषा सरल होना चाहिए; तथा तकनीकी शब्दों को व्याख्या सहित प्रस्तुत किया जाना चाहिए; समसामयिक मसलों और पर भी लेख होने चाहिए; लेखों की लम्बाई कम करने का प्रयास करना चाहिए। क्योंकि चकमक का लक्षित पाठक समूह 8-12 साल का है; परन्तु इस आयु के बच्चों के लिए विज्ञान सम्बन्धी सामग्री बहुत ही कम है; उसे बढ़ाया जाना चाहिए;

विज्ञान पर आधारित चित्रकथाएँ दी जानी चाहिए; साथ ही कार्टून आदि के उपयोग से लेख को जीवंत और रोचक बनाया जाए; पेड़-पौधों, पक्षियों, जंगल, जीव व वनस्पति विज्ञान के विषयों पर समसामयिक सामग्री दी जाए, आदि।

समीक्षा बैठक में विज्ञान की सामग्री के बारे में एक प्रतिक्रिया यह भी थी कि यह हिस्सा बहुत ही गम्भीर तथा बोझिल है। इसमें मनोरंजन का तत्व न होने से बच्चों को मज़ा नहीं आता है, और सामग्री में एकरसता है। दूसरे, इसमें पाठकों के साथ दुतरफा संवाद की गुंजाइश बहुत कम है। इसलिए लेखों के साथ किसी सवाल/लेखों से जुड़ी पहेली आदि पर पाठकों से जवाब/उनके अनुभव आमंत्रित किए जाने चाहिए बेहतर जवाबों को पुरस्कार देना चाहिए। ज़रूरत के हिसाब से लेखों तथा अन्य सामग्री में बच्चों को लेख से सम्बन्धित गतिविधि करने के लिए समुचित जगह छोड़नी चाहिए।

**साजसज्जा**

चकमक की साजसज्जा पर भी समीक्षा बैठक में कई टिप्पणियाँ आईं। प्रमुख टिप्पणियाँ इस प्रकार हैंः चकमक में काले रंग का इस्तेमाल ज़रूरत से ज़्यादा हुआ और इसके चित्रों की रेखाएँ बहुत मोटी हैं इसलिए वे आक्रांत करते हैं। कुछ चित्र अस्पष्ट है कुछ पन्ने काफी खुले लगते हैं तो कुछ ज़रूरत से ज़्यादा भरे हुए हैं। स्क्रीन, बार्डर स्पेस आदि का इस्तेमाल बेहतर होना चाहिए। मुखपृष्ठ पर अन्दर की सामग्री/थीम की झलक मिलना चाहिए। इसके अलावा चकमक में फोटो, कोलाज, कार्टून, कैरीकेचर, विभिन्न शैलियों के चित्र आदि का उपयोग नहीं के बराबर हैं; इनसे न केवल पत्रिका की रौनक बढ़ेगी, बल्कि जानकारी को नए आयाम भी मिलेंगे।

विभिन्न पक्षों पर कुछ और भी अहम सुझाव थेः चकमक में मज़ेदार होने का गुण कम है। वह गम्भीर पत्रिका लगती है। जबकि बच्चों को थोड़ा मनोरंजन भी चाहिए। चकमक के लेखों में सीख देने का भाव हावी लगता है। पढ़ने वाला हिस्सा ज़्यादा है, और देखने, करने का कम। चकमक के कुछ पन्नों को हर बार अलग-अलग शैलियों के चित्रों के साथ सजाना चाहिए। इससे बच्चों को विभिन्न शैलियों के चित्रों के बारे में पता चलेगा। पत्रिका के कुछ पन्ने अनिवार्य रूप से रंगीन होने चाहिए। चकमक के हर अंक के साथ पाठकों को कुछ नया मिलना

चाहिए (पोस्टर, मुखौटे बनाने की सामग्री, क्रेयान आदि)। चकमक में चिकने कागज़ (ग्लैज्ड पेपर) का उपयोग नहीं होना चाहिए। भारतीय भाषाओं की सामग्री का अनुवाद होना चाहिए। पारम्परिक कामों व हुनरों पर सामग्री होना चाहिए। भाषा या शब्दों पर कोई स्तम्भ होना चाहिए। पाठकों की राय का स्तम्भ अवश्य होना चाहिए।

**भविष्य की चकमक**

चकमक वर्तमान आकार में ही निकलेगी। इसमें कुल मिलाकर चवालीस पेज़ होंगे - कवर के चार तथा अन्दर के चालीस पन्ने। कवर रंगीन तथा अन्दर के पन्ने सिंगल कलर में रहेंगे। एक अंक दस रुपए का व वार्षिक सदस्यता शुल्क 100 रुपए होगा।

**चकमक में नया क्या होगा?**

चकमक के बारे में यह सवाल बहुत बाजिब है। छह महीने प्रकाशन के स्थगित रहने के बाद चकमक में क्या खास होने वाला है? समीक्षा बैठक में विद्वानों ने कई समस्याओं की ओर ध्यान आकर्षित करवाया है। उनमें से कई सुझाव बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। उन पर सिलसिलेवार चर्चा आगे की जाएगी। पर उसके पहले मैं उन। दो-तीन पहलुओं की बात करना चाहता हूँ जो मुझे चकमक की सबसे बड़ी बाधाएँ लगती हैं। और जिनका ठीक समाधान करने से चकमक की कई समस्याओं का निवारण हो सकता है। तब ही यह सचमुच नया, प्रभावी रूप लेगी।

पहली समस्या है, चकमक की सामग्री में कुछ सिखा देने का भाव हावी रहता है। यह शायद चकमक की प्रकाशन यात्रा के इतिहास के कारण है। वह स्कूल के इर्द-गिर्द खड़ी पत्रिका लगती है। कभी-कभी मे एक (सॉफ्ट) अनौपचारिक पाठ्यपुस्तक जैसी। इसलिए ही चकमक बड़ों, शिक्षक, पालक, लिखने-पढ़ने वाले के ज़्यादा करीब है। वे ही इसे बहुत ज़्यादा उपयोगी भी बताते हैं। बच्चों के दिल तक चकमक पहुँचती होगी इसमें बहुत सन्देह है। भी बच्चों की दुनिया में आज जितने रंग, रोमांच, जानकारियाँ, सपने, और द्वंद हैं उनके बीच चकमक जैसी सादी पत्रिका उन्हें लुभा पाएगी, उनकी दुनिया की साथी बन पाएगी। यह कहना मुश्किल है। चकमक की सामग्री की गुणवत्ता कभी भी चकमक की समस्या नहीं रही और न आज है। समस्या है किसी भी विषय को आज के हिसाब से पेश करने के हमारे तरीके में। इसमें रंग भी शामिल हैं, डिज़ाइन भी शामिल है और किसी चीज़ को कहने का तरीका भी शामिल है। स्कूल से पहले से ही त्रस्त बच्चे निश्चित ही इस पत्रिका से स्कूल की गंध आने के कारण बहुत जुड़ नहीं पाते होंगे। चकमक पाठकों के लिए कुछ छोड़ने मे विश्वास नहीं करती है। एक किस्म की छन्नी लगाकार चीज़ें साफ सुथरी करके दी जाती हैं। यह भाव चकमक बनाने वालों में कुछ इस तरह से बैठा है कि वे खुद इसे देख नहीं पाते। इस पत्रिका की बात मुझे ज़यर अच्छी लगती है कि अच्छी सामग्री के अकाल में बच्चों को इसमें बगैर प्रश्नों के उत्तर देने की शर्त के कुछ पढ़ने को मिल जाता है।

दूसरी समस्या है चकमक के पूल में विविध विचारों, विविध परिवेशों, विविध विधाओं के लेखकों का अभाव। इससे पत्रिका में ताजगी का अभाव है। सामग्री में एकसापन है। विभिन्न परिवेशों की कहनाते, मुहावरे, शब्द, लहजे आदि गायब हैं। लगता है जैसे कोई डर हो कि हमारे रास्ते से थोड़ी अलग सामग्री देने से पाठक बहुत ही अवैज्ञानिक, बेतुका आदि हो जाएगा।

तीसरी समस्या है ले आउट-डिज़ाइन का पक्ष। चकमक का यह पक्ष कभी भी सराहनीय नहीं रहा। विप्लव के कुछ महीनों प्रयासों को छोड़कर इस पक्ष पर बहुत प्रयोग नहीं हुए। विप्लव अगर इसमें कम से कम एक साल और लगाते तो हम निश्चित रूप से कहीं न कहीं पहुँचते। (हालाँकि पिछले छह अंकों में इस पक्ष में काफी सुधार दिखता है।) जब मैं इस पक्ष की बात कर रहा हूँ तो सिर्फ उन व्यक्तियों की ही बात नहीं कर रहा जो सीधे तौर पर चकमक की डिज़ाइन का काम देख रहे हैं, बल्कि इसमें व्यक्ति भी शामिल है जो संपादन का काम देख रहा है। खासकर लेखों के मामले में यह पक्ष अपने सबसे कमजोर रूप में सामने आता है। गम्भीर लेखों की प्रस्तुति कमजोर होने से वे असहनीय हो जाते हैं। आकर्षक बाक्स आइटम, कैरीकेचर, कार्टून, चित्रकथा, किस्से, जीवंत शैली तथा बोलचाल की भाषा आदि के बगैर, सूखे लेखों से बाल मन को बाँधा जा सकता। वैसे भी पाठकों की नज़र दृश्य/सज्जा पर सबसे पहले जाती है। चित्रों के स्तर पर भी बहुत काम करने की ज़रूरत है।

ये तीन समस्याएँ मुझे साफ तौर पर नज़र आती हैं। नई चकमक में हमारी कोशिश इनसे निजात पाने की रहेगी। उम्मीद है एक तीन सदस्यीय संपादकीय टीम इनसे निपट पाएगी। हम एक सशक्त लेखक पूल बनाने की कोशिश भी कर रहे हैं। अगले दो-तीन महीने हम इसमें झौंकेंगे और इसे कर डालेंगे। ले आउट-डिज़ाइन पक्ष पर अतनु व कनक की मदद से काम कुछ आसान हो जाएगा। और फिर आप सब तो हैं ही हमारे साथ।

**संभावित स्तम्भ**

| | |
|---|---|
| लघु कहानियाँ | - 2 (दो/तीन कहानियाँ) |
| कहानी | - 2/3 पेज़ वाली एक कहानी |
| कविता | - 2 पेज़ (तीन-चार कविताएँ) |
| नाटक/यात्रा/इंटरव्यू/पत्र/डायरी/ सकते हैं) | - 2/3 पेज़ इनके विषय (विज्ञान, इतिहास आदि भी हो |
| पुस्तक अंश/धारावाहिक | - 3 पेज़ |
| सवालीराम | - 1/2 (विज्ञान तथा गैर-विज्ञान विषयों के सवाल) |
| गतिविधि के पन्ने ऑरीगेमी, कोई खेल | - 6 पेज (क से, चित्र पहेली, माथापच्ची, क्राफ्ट, आदि) |
| क्विज | - चकमक के अंक पर आधारित - 1 |
| पुस्तक चर्चा | - 1 पेज़ |
| लेख आदि से | - 12 पेज़ (इतिहास, कला, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान सम्बन्धित) |
| सिनेमा/खेल | - 3 पेज़ |
| चित्रकथा | - 3 पेज़ |
| बच्चों के पन्ने | - 4 पेज़ |
| कार्टून/फोटो/ | - 1पेज़ |

**चकमक के विभन्न स्तम्भों के लिए इन लोगों से सम्पर्क किया गया:**

**वाइल्ड लाइफ व पक्षी संसार**

संगीता राजगीर- पक्षी विज्ञानी
के .मूर्ति - मुख्य वन संरक्षक (विभिन्न उद्यानों में समय बिताया है कई रेस्क्यू ऑपरेशन किए हैं।)
दत्ता - जंगल के अनुभव
श्री लॉड - पक्षी विशेषज्ञ
शमशेर अहमद - वाइल्ड लाइफ पर लिखते हैं (फोटोग्राफर)
अनूप दत्ता - वाइल्ड लाइफ पर लिखते हैं (फ्री प्रैस में ब्यूरो इंचार्ज)
किशोर पँवार -
संस्कृति मैनन - सीईई
डॉ. यशपाल - डीएमआई

**एक्टिविटी**

प्रभात - अंकुर, दिल्ली
लाड साब
रवीन्द्र केसकर
कालरा साब -
कमलेश जी -

**यात्रा वृतांत**

तेज़ी ग्रोवर
विनोद कुमार
विक्रम चौहान
शाश्वत शुक्ल
मिहिर
तान्या

**विज्ञान व सामाजिक विज्ञान के लेख**

अनीता रामपाल
टीवी
सुशील जोशी
जस्टिन जोसेफ
एमटी मुरली
सोनिका कौसिक
मालविका
शुंभुदयाल गुरू
वंदना

दीपिका कोठारी
बृजमोहन
जयश्री
रश्मि पालीवाल
प्रियंवद